बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 04

धर्मशाला, सोमवार,23 मार्च 2015

प्रदेश के युवा शराब व धूम्रपान के शिकार

● 7.18 फीसदी ने कबूला शराब का सेवन ● 7.36 फीसदी युवाओं ने लिया धूम्रपान का सहारा ● तंबाकू चबाने की लत से शिकार महज 1.21 फीसदी

हिमाचल प्रदेश के राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के सहयोग से नेशनल इंस्टीच्यूट आफ मेंटल हैल्थ एंड न्यूरो साइंसिज बंगलूरू के यूथ हैल्थ सर्वे में प्रदेश के युवाओं में नशीले पदार्थ लेने के चलन को लेकर भी अहम खुलासे हुए हैं। प्रदेश के युवा अधिकतर धूम्रपान व शराब का सेवन करते पाए गए हैं। वहीं राहत की बात यह है कि इनमें ड्रग्ज लेने वालों की संख्या काफी कम पाई गई है।

प्रदेश में 7.18 फीसदी युवाओं ने कबूला है कि उन्होंने शराब का सेवन किया है। वहीं 7.36 फीसदी युवाओं ने माना कि उन्होंने धूम्रपान का सहारा लिया था। इसके अलावा तंबाकू चबाने की लत से प्रदेश के युवा काफी दूर पाए गए हैं। तंबाकू चबाने वालों की संख्या महज 1.21 फीसदी आंकी गई है।

Smoking related characteristics of Youth of Himachal Pradesh

	Male	%	Female	%	Total	%
Ever smoked	200	13.44	13	0.92	213	7.36
Currently smoking	122	8.20	5	0.36	127	4.39
Age at 1st smoke						
Below 15 years	32	16.00	3	23.08	35	16.43
15-18 years	124	62.00	6	46.15	130	61.03
18 years and above	44	22.00	4	30.77	48	22.54
Overall prevalence of smoking dependence	82	5.58	4	0.27	87	3.01
Prevalence of smoking dependence among smokers	82	41.50	4	30.77	87	40.85
Passive smoking						
At home - Mean days per week	4.48	2.09	1	-	4.69	2.16
At work place - Mean days per week	5.35	2.11	1	-	5.78	2.84

सर्वे रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में एलकोहल या शराब का इस्तेमाल करने वाले युवाओं की संख्या 7.18 फीसदी है। सर्वे के अनुसार कभी कभार शराब पीने वालों में 11.90 फीसदी लड़के और 2.20 फीसदी लड़कियां शामिल हैं। वहीं मौजूदा समय में शराब पीने वालों की संख्या 5.35 फीसदी आंकी गई है। इनमें 9.40 फीसदी लड़के और 1.07 फीसदी लड़कियां शामिल हैं।

शराब का सेवन कर चुके युवाओं में से 60 फीसदी ने 18 वर्ष की आयु से पूर्व ही इसका सेवन किया था। वहीं शराब के आदि लड़कों की संख्या 4.91 फीसदी दर्ज की गई है। इसके अलावा प्रदेश में ऐसे युवाओं की संख्या बहुत ही कम पाई गई है, जो इंजेक्शन के जरिये या सुंघकर ड्रग्ज का इस्तेमाल करते हैं। यह आंकड़ा क्रमश: .46 फीसदी और .35 फीसदी दर्ज किया गया है।

प्रदेश में धूम्रपान का सहारा लेने वाले युवाओं की संख्या 3.01 फीसदी दर्ज की गई है। इनमें से 5.58 फीसदी लड़के और 0.27 फीसदी लड़कियां शामिल हैं। वहीं धूम्रपान करने वाले लड़कों में से 41.5 फीसदी लड़के धूम्रपान करने के आदि पाए गए हैं। वहीं लड़कियों के मामले में यह संख्या 30.77 फीसदी रही। युवाओं पर किए गए इस सर्वे में युवाओं में धूम्रपान के प्रचलन को लेकर विभिन्न पहलुओं की जानकारी हासिल की गई है। इसके तहत सर्वे में शामिल हुए 4.36 फीसदी युवाओं ने अपने जीवन में कम से कम एक बार धूम्रपान का सहारा लिया था। इनमें लड़कों की संख्या 94 फीसदी आंकी गई है। वहीं लड़कियों की संख्या महज छह फीसदी ही रही है। जीवन में कभी न कभी धूम्रपान कर चुके युवाओं में से 61.03 फीसदी की आयु 15 से 18 वर्ष के बीच थी। वहीं 15 वर्ष की आयु से पूर्व ही धूम्रपान करने वाले युवाओं की संख्या 16.43 फीसदी आंकी गई है। इसके अलावा 18 वर्ष या इससे अधिक आयु वर्ग में 22.54 फीसदी युवाओं ने कबूला है कि उन्होंने अपने जीवन में कभी धूम्रपान का सहारा लिया था।

तंबाकू चबाने के आदि नहीं हैं युवा

प्रदेश में तंबाकू चबाने वाले युवाओं पर किए गए सर्वे में राहत देने वाली जानकारी हासिल हुई है। इसके तहत प्रदेश में तंबाकू चबाने वाले युवाओं की संख्या काफी कम है। सिर्फ 1.21 फीसदी युवाओं ने ही जीवन में कभी तंबाकू चबाया था। इनमें लड़कों की संख्या 2.28 फीसदी और लड़कियों की 0.07 फीसदी रही। इस तरह महज 0.07 फीसदी युवा ही तंबाकू चबाने के आदि पाए गए हैं।

Alcohol related characteristics of Youth of Himachal Pradesh

	Male	%	Female	%	Total	%
Ever drank alcohol	177	11.90	31	2.20	208	7.18
Currently drink alcohol	140	9.40	15	1.07	155	5.35
Mean age at 1st drinking alcohol	17.77	2.07	17.10	2.07		
Age at first drinking alcohol						
<15 years	12	6.78	2	6.45	14	6.73
15-18 years	99	55.93	21	67.74	120	57.69
>18 years	66	37.26	8	25.81	74	35.58

नशे के लिए चोरी तक करते हैं युवा

सर्वे के दौरान विशेषज्ञों ने युवाओं से नशीले पदार्थों के सेवन को लेकर रायशुमारी भी की। इसके तहत हिमाचल प्रदेश के युवाओं का मानना है कि इनका इस्तेमाल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जो लोग इनका इस्तेमाल करते हैं, वे अपराध और खुद को नुकसान पहुंचाने का काम कर सकते हैं। नशा करने वाले अधिकतर युवा शराब के सेवन के साथ ही तंबाकू व भांग का इस्तेमाल करते हैं। इनमें बहुत कम ऐसे हैं, जो ड्रग्ज लेते हैं। इन युवाओं ने नशा करने का कारण निजी समस्याएं, खुशी और गम के अलावा दबाव की स्थिति बताया है। नशे के लिए वे अलग-अलग उपाय करते हैं। इसके तहत कोई अपने अभिभावकों से जरूरत से ज्यादा पैसा मांगता है, कोई अपनी पाकेट मनी का दुरुपयोग करता है, कोई अपने ही घर में चोरी करता हं, कोई दोस्तों से मांगता है या दस्ती लोन लेता है, तो कोई अपना सामान बेच कर रकम जुटाता है। इन युवाओं से बातचीत में यह भी पता चला है कि नशा करने वाले युवा ऐसा करके खुद पर गर्व महसुस करते हैं, तो इनमें से कोई इसे अपना स्टाइल मानता है।

अनजाने में की गलती ने बदली कुलदीप की जिंदगी

➡ सही परामर्श व इलाज के चलते टूटने से बचा परिवार ➡ पत्नी भी हो गई थी एचआईवी से प्रभावित

भरी जवानी में एक नौजवान एक जानलेवा बीमारी से इस कदर कमजोर हो गया था कि उसका 75 किलो का बलिष्ठ शरीर सिकुड़ कर महज 33 किलो रह गया। हंसने-खिलखिलाने वाले उसके लब मानो सिल से गए थे। मौजमस्ती करता एक लड़का इतना खामोश हो गया कि बतियाना-मुस्कराना तक भूल गया। कभी हिन्दुस्तान भर की सड़कों पर डीजल-पेट्रोल के टैंकर तेज रफ्तार में चलाता यह लड़का अपने दम पर बिस्तर पर करवट तक लेने में असमर्थ हो गया। बेदम से हो गए जिस्म से उठना-बैठना भी दुश्वार हो गया था।

एक दिन ऐसा भी आया कि उसे अपने पैरों पर खड़े होने के लिए बैसाखी तक खरीदनी पड़ी, जिसके दम पर वह थोड़ी देर खड़े होने का अभ्यास करता। 'सन्नी देओल के गुस्से' का शौकीन यह लड़का कभी बैसाखी तो कभी डंडे का सहारा लेकर चलने की बेचारगी से ५ महीने के अनगिनत लम्हों में जूझता रहा। वह भी एक ऐसी गलती जिसका पछतावा तो किया जा सकता है, मगर इलाज नहीं है। यह गलती थी असुरक्षित यौन सबंध। इसके कारण वह एड्स का शिकार बन गया था। यह ऐसी बीमारी थी, जिसके सदमे, लोगों की उपेक्षा और समाज में फैलाई गई भ्रांतियों के हौव्वे ने उसे जीते जी बुत बना दिया था।

गमगीन जिंदगी में पहली बार यह जानकर खुशी आई कि दोनों बच्चे एचआईवी पॉजिटिव नहीं हैं।

पहाड़ों का निवासी यह लड़का पहले खुद की उदासी-सदमें और जिस्मानी कमजोरी से जूझा फिर उसकी गलती का खामियाजा उसकी बीवी को भी भूगतना पड़ा। अपनी पत्नी को इसी बीमारी से ग्रस्त किए जाने की जानकारी पाकर वह और भी टूट गया। कभी खूब हंसने-खिलखिलाने वाली उसकी घर वाली उस मनहूस दिन के बाद फिर खुश न हो पाई। जब उसे खुद के भी एचआईवी पॉजिटिव होने का पता चला, उस रात वह और कुलदीप सदमे के कारण कुछ बोल न पाए। तमाम चिंताओं, मौत के डर और समाज की निंदा के बारे में सोचकर उन दोनों ने आंसू नहीं थम पा रहे थे। दो बच्चों के इन अभिभावकों की गमगीन जिंदगी में पहली बार यह जानकर खुशी आई कि इनके दोनों बच्चें एचआईवी पॉजिटिव नहीं हैं। पत्नी की सेवा, परिवार के सहयोग और दवाओं के दम पर इनकी बिखरी जिंदगी धीरे-धीरे पटरी पर लौटने लगी।

खर्चीला और मददगार स्वभाव का कुलदीप हमेशा दूसरों और अपनों के साथ खड़ा रहा। अपनी बहन की खूब धूमधाम से शादी करना उसका सपना था। अपने पैसों से उसने न सिर्फ अपनी बहन बल्कि ससुर की मृत्यु होने के कारण अपनी साली की शादी भी धूमधाम से की। यहीं नहीं अपनी बुआ का घर भी अपने पैसों से बनवाया। पिता की अपंगता की वजह से खूब पढ़ने का अधूरा सपना वह अपने छोटे भाई को पढ़ाकर पूरा कर रहा है। अपनी जिंदगी में आए पतझड़ को दरकिनार कर जिंदगी की बची-खुची खुशियों की फसल को सिंचने का काम भी वह बखूबी कर रहा है। उसके बगीचों में उसकी मेहनत से लगे मीठे सेब कईयों के मुंह में मिठास घोल रहे हैं।

आज यह लड़का न सिर्फ अपने घर-परिवार व बच्चों की परवरिश कर रहा है, बल्कि गुंजन सस्था के कम्यूनिटी सेंटर से जुड़कर तमाम उदास चेहरों की मुस्कान और सहारा भी बना है।

लीडरशिप एक प्रवृत्ति के बजाय एक जिम्मेदारी

लीडरशिप एक प्रवृत्ति के बजाय एक जिम्मेदारी है। एक इच्छा, जो आने वाले कल की तस्वीर बड़े फ्रेम में देखती है। एक योग्य लीडर दूसरों के हुनर को निखार-कर उन्हें मजबूत बनाता है। वह विजन को असलियत में तब्दील करना जानता है। वह लोगों को लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है। बेहतर कम्युनिकेशन की दरकार : एक लीडर में अपनी बात को असरदार तरीके से दूसरों तक पहुंचाने का हुनर आना चाहिए। एक लीडर, अगर अपनी बात अपने साथ काम करने वालों को बेहतर तरीके से कम्युनिकेट कर पाने में समर्थ है, तो इससे कामकाजी माहौल ऊर्जा से भर जाता है, लोग उत्साह से काम में जुटते हैं और उनकी रचनात्मकता काम में झलकने लगती है। जुनूनी हो टीम : एक दूरदर्शी सोच रखने वाला लीडर एक जुनूनी टीम बनाने में यकीन रखता है। यह टीम एक समान लक्ष्यों के लिए पूरे जोशोखरोश से काम करती है। अपना कारोबार फैलाती किसी भी कंपनी को एक मजबूत मैनेजमेंट के साथ-साथ ऐसी टीम की भी दरकार रहती है, जो साथ काम करने वालों के बीच आपसी एकता, यकीन व आदर की बुनियाद पर बनी हो।

साफ-सुथरा कामकाज : कामयाबी का राज है, कामकाज में साफ-सुथरापन। एक कामयाब लीडर इस बात की अहमियत जानता है और अच्छे कामकाज के लिए अपने एंप्लॉई के साथ एक बेहतर समझ विकसित करता है। इससे न सिर्फ कामकाज का बिना किसी रुकावट के निपटारा होता जाता है, बल्कि टीम के भीतर एक खुशनुमा कामकाजी माहौल भी बरकरार रहता है।

लचीलापन बनती है ताकत : लीडर को अपने फैसलों में जरूरत पड़ने पर लचीला रुख भी अपनाना चाहिए। मौजूदा हालात को देखते हुए उसका लचीला रुख कई मायनों में अहम हो सकता है। बड़े फैसले करने में यह रुख हर लिहाज से कारगर होता है। साथ काम करने वाले किसी सख्ती के बरक्स कई तरह की गुंजाइशों वाले लचीले रुख को ज्यादा तरजीह देते हैं।

हालांकि कई दफा एक मैनेजर और लीडर के कामकाज की कई समानताओं की वजह से उनके बीच अंतर बहुत कम नजर आता है, लेकिन दोनों के रोल में काफी फर्क होता है।

क्या है फर्क

इन दोनों के रोल में बड़े फर्क की ओर इशारा करते हुए पावरब्रैंड के सीईओ दीपक कायस्थ कहते हैं कि मैनेजर की यह कोशिश रहती है कि काम सही तरीके से हो, जबकि एक लीडर सही काम करता है। मैनेजर फायदे के बारे में सोचकर काम करता है, लीडर का ध्यान काम की मौलिकता पर होता है। एक लीडर में प्रेरित करने, सोच को आकर देने और बेहतर रणनीति बनाने के गुण होते हैं। इसके उलट, एक मैनेजर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बने-बनाए ढर्रे पर ही काम करता है।

क्यों जरूरी है फर्क करना

इस बारे में साइट्रिक्स इंडिया के वीपी और जीएम राकेश सिंह का कहना है कि इस फर्क की समझ रखने से दोनों के रोल को परिभाषित करने में मदद मिलती है। यह नोट करना जरूरी है कि एक लीडर हमेशा एक चुनौती भरे काम से जूझता है, जबकि मैनेजर के पास रूटीन के काम होते हैं। मैनेजर के काम में एकजैसापन होता है, जबकि लीडर की खोज हर बार कुछ नया करने की होती है। मैनेजर कभी भी कोई रिस्क लेने से हिचकता है, जबकि लीडर ऐसा करने में यकीन रखता है। इसलिए इनके रोल का फर्क समझना जरूरी है।

लीडर से मिलती है प्रेरणा

बगैर लीडरशिप क्वॉलिटी के कोई अच्छा मैनेजर नहीं बन सकता। ल्यूपिन लिमिटेड के एचआर-प्रेजिडेंट दिवाकर कजा की मानें तो तमाम एंप्लॉई अपने मैनेजर को ऑर्गनाइजेशन की बनावट की वजह से फॉलो करने के लिए बाध्य होते हैं।

जबकि वे लीडर को इस गरज से फॉलो करते हैं क्योंकि उनके साथ काम करते हुए वे कई तरह से प्रेरित होते हैं। पारंपरिक रूप से भी यही माना जाता है कि एक लीडर नया करने की जुगत में रहता है, जबकि मैनेजर एंप्लॉई और कंपनी को चलाने में ही मसरूफ रहते हैं।

नशा छोड़ने वालों के लिए उम्मीद की किरण है मशवरा केंद्र जम्मू

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर नार्थ-।। की टीम ने जम्मू स्थित नशानिवारण केंद्र मशवरा का दौरा किया। सोमवार को सेंटर की टीम ने जम्मू-कश्मीर सोसायटी फार प्रमोशन आफ यूथ एंड मासेज के तत्वावधान में चल रहे इस केंद्र का रिकार्ड व यहां की व्यवस्थाओं को जांचा। इस दौरान यहां नशे की लत छुड़वाने के लिए दाखिल मरीजों से बातचीत भी की गई। इस बातचीत के दौरान यह बात सामने आई है कि नशे की लत का शिकार लोग अब सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की ओर से चलाए जा रहे नशानिवारण केंद्रों में रुचि लेकर अपनी इस समस्या को दूर करने में गंभीर हैं। यहां दाखिल लोगों में से अधिकतर का यही कहना था कि इस लत को छोड़ने के लिए नशानिवारण केंद्र में जो मदद मुहैया करवाई जाती है, उससे नशे के खिलाफ लड़ने को उनकी मानसीक व शारिरिक ताकत में इजाफा हुआ है।

मशवरा केंद्र जम्मू की टीम

कहां से कहां पहुंच गया साफ्टवेयर इंजीनियर

साकेत डोगरा साफ्टवेयर इंजीनियर हैं। एक निजी संस्थान में एसिस्टेंट प्रोफेसर की नौकरी की है। नशे की लत के कारण न केवल उनकी नौकरी चली गई, बल्कि उनका पारिवारिक जीवन भी इसकी वजह से उपजी कलह की भेंट चढ़ गया। शादी के कुछ ही समय बाद उनका तलाक तक हो गया था। एमएस इन्फोटेक तक की पढ़ाई करने वाला यह युवक शराब व चरस की लत के चलते कामयाब जीवन की दहलीज नहीं पार कर पाया। उसे जम्मू स्थित नशा निवारण केंद्र में उम्मीद की किरण दिखाई देती है। हालांकि इस केंद्र में पहले भी वह इलाज के बाद नशे की गिरफ्त में आने से खुद को नहीं रोक पाया, मगर इस बार वह पूरे मन के साथ स्वयं ही यहां आया है।

इस बार उनकी इच्छाशक्ति पहले से कहीं ज्यादा दिख रही है। साकेत का कहना है कि शुरुआत में दोस्तों की संगत में इन्सान नशा करने लगता है, मगर बाद में यह लत बनकर उसकी जिंदगी रफ्तार रोक देता है। उन्होंने बताया कि जब शराब के नशे से वह पूरी तरह परेशान हो गया था, तो उसने इसका विकल्प तलाशते हुए चरस पीना शुरू कर दिया। इससे वह दोहरे नशे का शिकार हो गया और उसका करियर व पारिवारिक जीवन तहस-नहस हो गया। साकेत ने बातया कि नशानिवारण केंद्र में आकर उसे इस लत से लड़ने की ऊर्जा मिली है। अबकी बार उसका इरादा इतना मजबूत लग रहा है कि वह इस लत को पूरी तरह छोड़ देगा।

बिहार के संजय पांडे का इरादा हुआ मजबूत

जम्मू के नशानिवारण केंद्र में बिहार के संजय कुमार पांडे भी इलाज करवाने पहुंचे हैं। संजय कुमार ने बताया कि 15 वर्ष पहले दोस्तों के साथ बैठ कर शराब पीने की आदत ने उन्हें इसका आदि बना दिया। इसके बाद उसे गांजा लेने की भी लत लग गई। मसाले की छोटी सी फैक्टरी चलाने वाले दो बच्चों के पिता संजय कुमार ने कहा कि इस लत के कारण उनके दो बच्चों व बाकी परिवार को दिक्कत होने लगी है। उन्होंने बताया कि जम्मू में उनके रिश्तेदार ने नशानिवारण केंद्र के बारे में बताया और वह यहां चले आए। संजय कुमार का कहना है कि अब उन्होंने इरादा कर लिया है कि अब वह परिवार के लिए अपनी इस वर्षों पुरानी लत को छोड़ देंगे। उन्होंने बताया कि नशानिवारण केंद्र में आकर उन्हें यकीन हो गया है कि वह इस लत को मात दे सकते हैं।

25 साल पुरानी दोस्ती तोड़ने को तैयार रिटयर फौजी

फौज से रिटायर वेद कुमार शर्मा फौज की नौकरी में शराब पीने की लत लेकर घर पहुंचे तो उन्हें महसुस हुआ कि यह आदत उनके परिवार के लिए कितनी परेशानी का सबब बन गई है। शराब की लत के चलते मिल रही शर्मिंदगी ने वेद प्रकाश के मन में इतना प्रभाव डाला है कि वे शराब से चल रही अपनी 25 साल पुरानी दोस्ती छोड़ने को तैयार हैं। उन्होंने ठान ली है कि अब वह शराब से ज्यादा अपनी परिवार को समय देंगे और अपने तीन बच्चों की परवरिश की ओर गंभीरता से ध्यान देकर एक खुशहाल नशारहित जीवन जीयेंगे।

शराब की लत से लड़ गया दिहाड़ीदार

दिहाड़ी लगाकर परिवार का पालन-पोषण करने वाले अशोक कुमार को शराब को छोड़ने के बाद इससे दोबारा दोस्ती करना महंगा पड़ा है। करीब नौ साल तक शराब छोड़ने के बावजूद एक दिन दोस्तों की संगत में इसे अपने पास आने देने का खामियाजा उन्हें इसकी दोबरा लत लगने के तौर पर भुगतना पड़ा है। दो बच्चों के इस मजदूर पिता के लिए परिवार के साथ-साथ शराब का जरूरत पूरा करना आसान नहीं था। बच्चों के भविष्य को देखते हुए उसने नशानिवारण केंद्र में आने की ठानी और अब वह यहां रहकर शराब की दोबरा लगी लत को दूर करने के लिए मानसीक व शारिरिक तौर पर मजबूत होने की जुगत में लगा है।

इंजीनियर के सपने के आड़े आई हेराईन

इंजीनियर बनने का सपना लिए पठानकोट के एक कालेज में दाखिल हुआ जम्मू का युवक कुछ नशाखोर दोस्तों की संगत में इस कदर पड़ा कि उसे हास्टल में किताबों के साथ होने के बजाय नशानिवारण केंद्र की राह पकड़नी पड़ी।

बीस साल के इस युवक साहिब ने अपने दोस्तों को हेराइन का कश लगाते देखा तो उसे लगा कि न जाने वे कौन सा आनंद ले रहे हैं, जो उसे नहीं मिला। फिर क्या था, उसने भी इस सफेद पाउडर को सुंघ लिया। शुरू में तो उसे पढ़ाई की परेशानी से दूर कोई अलग ही दुनिया नजर आने लगी, मगर जब वह इस दुनिया के अंदर पहुंचता गया तो उसे वापस आने की राह नहीं दिखी। जब उसका दुबला पतला शरीर असंतुलित होकर डगमगाने लगा और उसका इंजीनियर बनने का सपना उससे दूर होता दिखा तो उसे समझा आई कि वह गलत काम में फंस गया है। उसके लिए अभी देर नहीं हुई थी।

परिवार के लोगों ने भी उसका साथ देते हुए उसे समय रहते नशानिवारण केंद्र पहुंचाया।यहां वह करीब डेढ़ माह से है और पूरी तरह से तंदरूस्त होकर इस नशे से दूर होने लगा है। साहिब ने बताया कि यहां आकर उसे अपनी अहमियत पता चली है। साथ ही यह भी पता चल गया है कि वह जो कर रहा था वह उसके व उसके परिवार के लिए कितना गलत था।

आरआरटीसी नार्थ-।। सिद्धबाड़ी में ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से गुंजन संस्था द्वारा संचालित रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर नार्थ-।। सिद्धबाड़ी में नशे के शिकार बच्चों को विशेष देखभाल की जरूरत विषय पर एक ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गुंजन के कार्यकारी निदेशक संदीप परमार ने की।

ट्रेनिंग देने के लिए एम्स दिल्ली के विशेषज्ञ डा. विश्वदीप चटर्जी एवं चाइल्ड लाइन फाउंडेशन की रीजनल रिसोर्स सेंटर दिल्ली की समन्वयक हिनू सिंह शामिल हुए। समापन अवसर पर जिला बाल विकास अधिकारी तिलक राज आचार्य ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। उन्होंने प्रदेश में बच्चों के लिए कार्य कर रही संस्थाओं की प्रशंसा की। प्रशिक्षण में चाइल्ड लाइंस से जुड़े हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व पंजाब के प्रतिनिधी शामिल थे। डा. विश्वदीप चटर्जी ने बताया कि अगर बच्चा स्कूल नहीं जा रहा है, उसका पढ़ाई में मन नहीं लग रहा है, घर के सदस्यों से कटा हुआ है और घर से बाहर ही ज्यादा समय बिता रहा है, तो इसका कारण उसे नशे की लत लगना हो सकता है। उन्होंने बताया कि जब बच्चे के नशा करने की लत का पता चल जाता है, तो उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाए जिससे उसे यह न लगे कि वह सुधर नहीं सकता। उन्होंने कहा कि बच्चों को पहले जरा भी न डांटा जाए। उसके साथ दोस्ताना व्यवहार करके उसको उसकी आदत के दुष्प्रभावों के बारे में बताया जाए और अप्रत्यक्ष तौर पर एहसास दिलाया जाए कि उसकी इस लत के कारण उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है। उन्होंने बताया कि नशा छोड़ने के लिए बच्चे को मानसीक, शारीरिक व साामाजिक दिक्कतें आ सकती हैं। उन्होंने प्रशिक्षुओं को प्रभावित बच्चे के इलाज की विधियां बताईं। डा. चटर्जी ने बताया कि एक बार नशा छुड़ाने के बाद भी बच्चों पर सावधानी पूर्वक नजर रखने की जरूरत होती है। उन्होंने बताया कि करीब 60 फीसदी मामलों में पाया गया है कि कई बच्चे करीब तीन माह के बीच में दोबारा नशा लेना शुरू कर देते हैं। परिवार के सदस्यों या बाहरी लोगों के ताना मारने के कारण भी बच्चे दोबारा नशा लेने पर मजबूर हो सकते हैं। ऐसे मामले में बच्चों को समझाने और उनका खास तौर पर ख्याल रखने की जरूरत होती है। वे दोबारा इलाज व परामर्श से पूरी तरह ठीक हो जाते हैं।

स अवसर पर सानू कुमारी, प्रेम सिंह, मीना, रंजना, नीलम मेहता, अमनदीप, रीता, सरीता, विनीता, अजय वर्मा, सुनील, मनोहर, रीनू, प्रिया, पिंकू, अनीता, ललीता, चमन, नीता, सरीता अरोड़ा, राकेश, बलविंद्र, चमनलाल, सोनिया, कुलविंद्र कौर, सुनीता, संदीप गिल, राकेश मलिक, हरमनदीप, जसवंत, पिंकी जैन, साक्षी बाली, अमरजीत, अविनाश, विशाल, वंदना, अनीता व संतोष कुमारी ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षुओं को संबोधित करते मुख्यातिथि जिला बाल विकास अधिकारी तिलकराज आचार्य

चाइल्ड लाइन फाउंडेशन दिल्ली की समन्वयक हिनू सिंह को सम्मानित करते मुख्यातिथि

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice & Empowerment

Gunjan
Organisation for Community Development

Gunjan Organisation for Community Development
Regional Resource & Training Centre
Tapovan Road, Tehsil-Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.) - 176057
Phone : 91-1892-235315, 208255, 9459082624
Email: rrtcnorth.hp@gmail.com, gocd.hp@gmail.com
Website: www.gunjanindia.org

INSTITUTE OF SOCIAL DEFENCE NISD